राज
कामिक्स
विशेषांक
मूल्य 18.00 संख्या 169
राज का राज
नागराज

मुझे रोकने की बेकार कोशिशें मत करो, नागराज! वर्ना राज का राज जानने की कोशिश में तुम यमराज के पास पहुंच जाओगे...
...पर हां! अगर तुम अच्छे बच्चे बन-कर रहे तो मैं तुमको कुछ दिनों तक और जिन्दा रहने दूंगा, ताकि तुम यह देख सको कि कैसे फैलता है इस दुनिया पर...
राज का राज
संजय गुप्ता की पेशकश
कथा: जॉली सिन्हा
चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल कांबले
सुलेख एवं रंग संयोजन: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

सुबह का समय, बहुतों के लिए एक कप चाय की चुस्की लेते-लेते समाचार पढ़ने या देखने के लिए होता है–
कल देर रात, मुंबई के अधिकतर इलाकों में विद्युत आपूर्ति बाधित रही। एक सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार ऐसा मुंबई के पास स्थित तारापुर एटामिक संयंत्र में कुछ तकनीकी खराबी आ जाने के कारण हुआ!
मैं भी तो देखूं जरा कि पेपर वाले क्या कहते हैं?
यही रिपोर्ट हमारे पास भी आई थी। पर पेपर में तो कुछ और ही निकला है!
ओह, नागराज! मैं पढ़कर सुनाती हूं न!
तुम अपनी सुबह की कसरत जारी रखो! कभी-कभी तो ये कर पाने का तुमको समय मिलता है!
ओ० के०! सुनाओ!
पेपर वालों के अनुसार, तारापुर संयंत्र से परिष्कृत यानी प्यूरीफाइड यूरेनियम की छड़ें रहस्यमय ढंग से गायब हो गई हैं। इसका भी पता नहीं चला कि चोर कहां से आए और किधर गए?

इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें–तानाशाह

इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें–नागिन

...क्योंकि बच्चे ही इस दुनिया को वह रास्ता दिखाएंगे, जिस पर से भटक कर यह दुनिया न जाने कहां जा रही है! लेकिन बच्चों को वह रास्ता ढूंढने योग्य बनाना, हमारी जिम्मेदारी है! तुम बोर्डिंग स्कूल पहुंचो, नागराज भी पीछे-पीछे वहां पहुंच जाएगा!
धप्प
टाइम से पहुंच जाना!
भारती कम्युनिकेशंस के इस कदम ने सामाजिक सेवा के क्षेत्र में हलचल मचा दी थी-
मिस भारती, आपने इस स्कूल को बनाने में करोड़ों रुपए खर्च किए हैं! क्या आपको लगता है कि फुटपाथ पर रहने वाले ये आवारा बच्चे इस लायक हैं कि इन पर इतना खर्च किया जाए?
भविष्याश्रम
सबसे पहले तो मुझे आपकी भाषा पर आपत्ति है! इसे सुधारिए!...
...और रही 'लायक' होने की बात, तो इस बात की गारंटी तो आप अपने बच्चे की भी नहीं ले सकते कि वह पैसे खर्च कराने लायक है या नहीं!

...हम तो इन बच्चों को जिन्दगी में बेहतर मौके देने का प्रयास कर रहे हैं! और मुझे पूरा यकीन है कि इनके अन्दर छिपी प्रतिभा एक दिन इस दुनिया को संवारेगी!
वाह, भारती! खूब कहा!...
...तुम्हारा विश्वास और लगन देखकर मुझे भरोसा हो गया है कि तुम्हारी मेहनत जरूर सफल होगी!
नागराज!
हुर्रर्रर्र!
तुम भी हमारे साथ यहीं दाखिला ले लो नागराज!
हुम! अनाथ तो मैं भी हूं भई! पर मैं जरा 'ओवर-एज' हो गया हूं! उम्र में ज्यादा बड़ा! इसीलिए मेरे बदले की पढ़ाई भी तुम लोग ही कर लेना!
रिबन कटते ही वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा—
वाह, नागराज! ऐसा उद्घाटन सिर्फ तुम ही कर सकते हो!
अब इस भविष्यधाम का उद्घाटन करो नागराज! सब लोग इंतजार कर रहे हैं!

आइए! अब मैं आप लोगों को यह पूरा कॉम्प्लेक्स घुमाती हूं! इसमें क्लास रूम, लैब्स, रिक्रिएशन एरिया वगैरह-वगैरह तो हैं ही, साथ में आधुनिक यंत्रों से युक्त किचन, मेस, लायब्रेरी, डॉरमेटरी सभी कुछ है!
इसको चलाने में तो काफी खर्च आएगा, मिस भारती! और इसका क्या भरोसा कि जो बच्चे यहां पर भर्ती किए गए हैं, वे अनाथ और गरीब ही हों! कोई झूठ बोलकर आ गया तो?
हम हर बच्चे की पुलिस जांच कराते हैं! इसलिए गलती होने की गुंजाइश बहुत कम है! और रही खर्च की बात, तो कई 'बिजनेस हाउस' हमारी सहायता कर रहे हैं!
और ये बच्चे खुद भी चाहते हैं कि ये जल्दी से जल्दी पढ़कर नौकरी या कोई व्यापार करें और इस भविष्यधाम की सहायता करें!
वाह!
क्या बात है बच्चो? तुम लोग खुश नजर नहीं आ रहे हो? अपना स्कूल पसंद नहीं आया क्या?
पसंद तो आया नागराज! लेकिन एक खास चीज तो है ही नहीं!
कौन सी चीज?
झूले!
ओ, हां! झूले वाले ने तो परसों का वादा किया है! अब क्या करूं?
बच्चों की यहां पर शुरुआत ही नाराजगी से नहीं होनी चाहिए!
बच्चों, तुम लोगों को सांपों से डर तो नहीं लगता?
लगता है!
पर तुम्हारे सांपों से नहीं लगता, नागराज!
तब तो काम बन गया!

और कुछ ही देर बाद, सभी बच्चे अपने मनपसंद झूलों का आनंद ले रहे थे-
थैंक्यू, नागराज!
मैं तुम लोगों का दोस्त हूं, बच्चो! और दोस्ती में 'थैंक्यू' बोलने की कोई जरूरत नहीं है!
एमेजिंग वाऊ!
देख रहा हूं! पर यकीन नहीं हो रहा है!
अब समझा कि नागराज से बच्चे इतना प्यार क्यों करते हैं?
नागराज इज सुपर्ब!

नागराज के लिए, इस प्रशंसा का कोई मूल्य नहीं था। उसे खुशी थी तो सिर्फ एक बात की-
चलो! बच्चे खुश हो गए! वर्ना उनका दिल खराब हो जाता, और पढ़ाई में ध्यान नहीं लगता!
पर ये खुशी के पल, ज्यादा देर तक नहीं टिके-
ओह! झूला टूट रहा है! नागराज बचाओ!
सर्प झूले जमीन के कांपने की वजह से टूट रहे हैं!... भूकम्प आ रहा है!
जमीन की थरथराहट ने सभी को भूमि पर ला पटका-
परन्तु जमीन पर गिर-कर बचना भी मुश्किल हो रहा था-
आऽऽह! जमीन तो गर्म तवे जैसी तप रही है!
इ... इसमें... इसमें दरारें भी पड़ रही हैं!
जमीन टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो रही थी-
और अन्दर न जाने कहां से आ रहा गर्म वायु का प्रेशर-
जमीन के उन टुकड़ों को खिलौनों की तरह हवा में उछाल रहा था-
नागराज बचाओ!

घबराओ नहीं बच्चो! मैं तुमको कुछ नहीं होने दूंगा! ...
... शुक्र है कि स्कूल की इमारत मजबूत बनी है! इसीलिए ये भूकम्प के झटकों को सह गई, और मुझे सर्प रस्सी अटकाने की जगह मिल गई!
जल्दी ही भूकम्प के झटके खत्म हो गए-
पर जमीनी टुकड़ों का उछलना जारी था-
भारती! तुम सभी को लेकर स्कूल के अन्दर जाओ! वहां के सीमेंट के फर्श में दरारें नहीं पड़ी हैं!
ओह! यह कैसा भूकम्प था, जिसने जमीन को गर्म कर दिया?
भूकम्प के कारण पृथ्वी के केन्द्र का लावा ऊपर तक आ गया होगा, भारती! न जाने इस भूकम्प ने इस क्षेत्र में कहां- कहां पर तबाही मचाई होगी!
मैं अभी अपने जासूस सर्पों से मानसिक संपर्क करके इस क्षेत्र में हुई तबाही का जायजा लेता हूं!
नागराज ने जासूस सर्पों से संपर्क किया-
और उसे चकित हो जाना पड़ा-
?...

अर्थ: लेकिन यह असम्भव है

जमीन के गर्म होने और इस बिच्छू में कुछ संबंध हो सकता है भारती! मैंने सुना है कि ज्वालामुखी से निकलने वाली गैसों के अद्भुत मिश्रण, प्राणियों पर आश्चर्यजनक असर करते हैं!... पर इस वक्त इस बात पर रिसर्च करने का कोई मतलब नहीं है!
क्योंकि फिलहाल इस बिच्छू को रोकना ज्यादा जरूरी है!
आगे कदम बढ़ाते ही-
नागराज को पीछे हट जाना पड़ा-
ओह! जमीन से या हवा से, यह तो किसी भी रास्ते से मुझे अपने पास फटकने नहीं दे रहा है! तीसरे रास्ते का इस्तेमाल करना पड़ेगा!...
...जमीन के नीचे के रास्ते का!
नागराज के सर्प सुरंग खोदते गए, और नागराज जमीन के अन्दर घुसता चला गया-

और इस सुरंग के रास्ते, वह एक दूसरी सुरंग में जा निकला-
ओह! यहां पर तो बहुत गर्मी है! शरीर झुलसता सा लग रहा है!
यह जरूर वही सुरंग है जिसको बनाता हुआ यह बिच्छू यहां तक आ पहुंचा है!
यहां पर तो लावे का कोई निशान नहीं दिख रहा है। यानी इस गर्मी का कारण लावा नहीं कुछ और ही है!
लेकिन इस असहनीय गर्मी का और क्या कारण... ओफ! एकाएक कमजोरी लग रही है! मुझे आभास हो रहा है कि मेरे शरीर के सूक्ष्म सर्प मर रहे हैं! शायद ऐसा इस तीव्र गर्मी की वजह से हो रहा है!...
...यानी बिच्छू के ठीक नीचे!
... पर अब मैं उस स्थान तक आ गया हूं, जहां पर मैं पहुंचना चाहता था!
अब मैं इस बिच्छू तक पहुंच भी सकता हूं, और इसको असंतुलित भी कर सकता हूं!

अगले ही पल, नागराज का भीषण वार, बिच्छू के शरीर से आटकराया-
आऽऽऽह! इसका शरीर तो स्टील से भी ज्यादा कड़ा है!
और नागराज चीख उठा-
पलभर के लिए नागराज की चीख थमी-
और फिर से शुरू हो गई-
आऽऽऽह! इसके डंक ने तो मेरे शरीर में तेज जलन पैदा कर दी है!
अब नागराज असंतुलित था, और हमला करने की बारी बिच्छू की थी-
इसका शिकंजा भी काफी मजबूत है! मेरी हड्डियां कड़कड़ा रही हैं!
पर इसकी इस हरकत ने मुझे भी वार करने का मौका दे दिया है! क्योंकि अब मैं इसके मुंह के काफी पास हूं! अब इससे पहले कि ये मुझ पर आग उगले, मैं इस पर विष फुंकार छोड़कर...
...इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके आजाद हो जाऊंगा!
नागराज की घातक विष फुंकार ने बिच्छू के दिमाग को घुमाकर रख दिया था-
और अब वह आधी बेहोशी की हालत में वार कर रहा था-
ओफ! अब तो यह ज्यादा खतरनाक हो गया है!

अब यह बिना सोचे समझे वार कर रहा है, और इसके 'अग्नि-गोले' इधर-उधर टकरा कर तबाही फैला रहे हैं! अब इसकी आग को मैं रोकूं तो कैसे? इसका मुंह सर्प सेना से भरने की कोशिश करूंगा तो ये आग उनको ही जला डालेगी! ... आग का मुकाबला आग ही कर सकती है! पर मैं आग कहां से लाऊंगा?

नागराज के इस सवाल का जवाब—

उसे उन विशेष नागफनी सर्पों से मिला, जिनको देव कालजयी ने नागराज को उपहार स्वरूप देते हुए बताया था कि इन सर्पों की विशेषताएं उसको समय समय पर पता चलती रहेंगी—

ये अपने निशाने पर जाकर 'विस्फोटक' की तरह फटते हैं, नागराज! चूंकि इनको हम सीमित संख्या में ही पैदा कर सकते हैं, इसलिए तुमको जब कभी भी इनका प्रयोग करना हो, तब सोच समझकर ही करना!

फिलहाल तुम इनकी आग का प्रयोग, इस विशालकाय बिच्छू की आग को काटने के लिए कर सकते हो!

नागराज को एक नया प्रलयंकारी शस्त्र मिल गया था—

और वह पहली बार इस शस्त्र का प्रयोग करने जा रहा था—

असर घातक था-
बड़ाम
धड़ाक
बिच्छू के पैर जमीन से उखड़ गए-
लेकिन इस हमले ने अर्द्धमूर्छित बिच्छू के क्रोध को भी जगा दिया, और उसकी बचाव करने की प्रवृत्ति को भी-
वह तुरन्त अपने संभावित हमलावरों की तरफ मुड़ गया-
उसका वार 'ध्वंसक सर्पों' की तरफ बढ़ा तो जरूर-
लेकिन उसके वार में वह क्षमता नहीं थी जो ध्वंसक सर्पों के वार में थी-
रास्ता बदल सकने की क्षमता-
'ध्वंसक सर्प' बिच्छू के खुले मुंह में घुसते चले गए-
और बिच्छू के मुंह के कोमल आंतरिक अंग, यह धमाका नहीं झेल सके-
बड़ाम
एक तेज आवाज के साथ, बिच्छू धराशायी हो गया-
धड़ाम
आग द्वारा आग को काटने की योजना सफल हो गई थी-

वाह, नागराज! तुम्हारी यह शक्ति तो मैंने पहले कभी नहीं देखी!
मैंने भी नहीं देखी थी, मिस भारती! खैर चलिए, आगे के कार्यक्रम जारी रखे जाएं! यह खामख्वाह का व्यवधान तो दूर हुआ!
पर अब इस बिच्छू का क्या करें? इसको चिड़ियाघर में भेजें, या म्यूज़ियम में?
यहां पर तो छोड़ नहीं सकते!
इसको किसी 'बायोलॉजिकल रिसर्च लैब' में भिजवाना पड़ेगा, मिस भारती! क्योंकि यह जानना बहुत जरूरी है कि यह आखिरकार इतना विशालकाय हुआ कैसे, और इसके अन्दर आग फेंक सकने की शक्ति कैसे आई?
तुम कह तो रहे थे कि यह शायद ज्वालामुखी की गैसों के कारण हो...
कह तो रहा था, पर मुझे ज़मीन के नीचे कहीं पर भी लावे का कोई निशान नहीं मिला! हालांकि इसके द्वारा बनाई गई सुरंगों में गर्मी तो बहुत थी!...
...इसका रहस्य जानना ही होगा, मिस भारती!
बिच्छू का रहस्य जानने की चेष्टा में उसको महानगर युनिवर्सिटी की 'बायो रिसर्च लैब' में भिजवा दिया गया—
ओफ़! ड्रिल से छेद करके इसके खून का सैम्पल लेना पड़ा है! मुझे ऐसा लगा जैसे पत्थर में से खून निकाल रहा हूं!...
...और इसका खून भी लाल नहीं, गुलाबी निकला है!
आप खून को रो रहे हैं, मिस्टर वैद? इसको बेहोश रखने के लिए मुझे चार घंटे में इतनी एनस्थीसिया देनी पड़ी है कि उससे कम से कम दो सौ लोग दो दिनों तक बेहोश रहते!

कहानी 19 पेज से जारी

ओह! अब कुछ-कुछ समझ में आ रहा है!
क्या समझ में आ रहा है?
इस बिच्छू का खून गुलाबी होने का कारण है, इसके खून में श्वेत कणों की बहुतायत होना...
और ऐसा सिर्फ तभी होता है जब किसी जीवित प्राणी को रेडियोधर्मी यानी रेडिएशन युक्त वातावरण में रखा जाए।
अच्छा? और शायद यही कारण है इसके विशालकाय होने का। क्योंकि कई बार रेडिएशन के असर से जीवित कोशिकाएं बहुत तेजी से संख्या में बढ़ती हैं! पर यह रेडिएशन युक्त वातावरण में कहां पर रहा होगा?
शायद महानगर के पास वाले 'नरोरा न्यूक्लियर पॉवर स्टेशन' में!
हमको उनसे संपर्क करना चाहिए!
महानगर की बाहरी सीमा पर स्थित नरोरा पॉवर प्लांट में वैसे ही हलचल मची हुई थी-
ओ माई गॉड! अब यह महानगर में भी हो रहा है! यानी हमारे न्यूक्लियर प्लांट पर भी खतरा आ सकता है?
NUCLEAR POWER PLANT (NARORA) PROHIBITED AREA
हां सर! ऐसा ही घटनाक्रम दूसरे शहरों में स्थित न्यूक्लियर पॉवर प्लांटों के साथ घटा था! पहले तो उनके पास वाले शहरों में ऐसे छोटे-छोटे इलाकों में भूकंप आए, और फिर...
आई नो, आई नो! ऐसा करो, सिक्योरिटी बढ़ा दो, और रेड एलर्ट घोषित कर दो!
ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग!
इससे कुछ नहीं होगा सर! बाकी न्यूक्लियर प्लांट वालों ने भी ऐसा ही सिक्योरिटी इंतजाम किया था। पर कुछ फायदा नहीं हुआ!
ओ माई गॉड, माई गॉड! अब मैं क्या करूं?
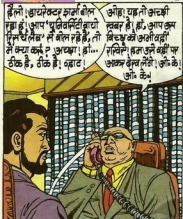
हैलो! डायरेक्टर शर्मा बोल रहा हूं! आप 'यूनिवर्सिटी बायो रिसर्च लैब' से बोल रहे हैं, तो मैं क्या करूं? अच्छा! हां... ठीक है, ठीक है! व्हाट!
ओह! यह तो अच्छी खबर है! हां, आप उस बिच्छू को अभी वहीं रखिए! हम उसे वहीं पर आकर देख लेंगे! ओ॰ के! ओ॰ के॰!
क्या बात है सर? आप एकाएक खुश क्यों हो गए?
समस्या का हल मिल गया, फड़के! तुम तुरन्त नागराज से संपर्क करो! वह करेगा हमारी समस्या का समाधान!
पर नागराज मिलेगा कहां पर? अब मैं सड़क पर जाकर 'नागराज-नागराज' चिल्लाऊं क्या?
गुड आइडिया! नागराज सुन लेगा। कहते हैं कि उसके हजारों कान हैं! अब जाओ, देर मत करो!
फड़के के पास, आदेश मानने के अलावा और कोई चारा नहीं था-
क्या बेवकूफी है? ऐसे चिल्लाने से लोग मुझे पागल समझकर पत्थर फेकेंगे! खैर, ऑर्डर इज ऑर्डर! चिल्लाता हूं!
नागराज! नागराज!
नागराज के हजारों 'कान' में से एक 'कान' वहीं पर मौजूद था-
वह 'कान' यानी 'जासूस सर्प' अपने सर को एक खास अंदाज में जमीन पर पटकने लगा-
पट खट्ट खट्ट
और उसमें से 'मानसिक संकेत' निकलकर महानगर को पार करते हुए-
नागराज के मस्तिष्क को खट-खटाने लगे-
मैंने चूड़ी है खनकाई
अब तो आजा तू हरजाई
ओ हो हो ऽऽऽ हो
उद्घाटन
मुझे जाना होगा भारती, कोई मुसीबत में मुझे पुकार रहा है!
प्रोग्राम बीच में छोड़कर? खैर, यह प्रोग्राम तुम्हारे काम से ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं है! जाओ!

कुछ ही मिनटों बाद - नागराज फड़के की पुकार का जवाब दे रहा था -
कहो! मुझको कैसे याद किया? यहां पर मुझे कोई खतरा तो नजर नहीं आ रहा है!
यह तो सचमुच आ गया! वाह!
खतरे ने ही तो तुमको याद... मेरा मतलब... मेरे बॉस, डायरेक्टर शर्मा तुमसे मिलना चाहते हैं नागराज! इस प्लांट की सुरक्षा के विषय में!
जल्दी ही डॉयरेक्टर शर्मा नागराज को एक संभावित खतरे के बारे में बता रहे थे -
इस बात को गुप्त रखा गया है नागराज! पर कुछ पेपरों में छपी खबरें सच हैं! दो न्यूक्लियर पॉवर प्लांटों से यूरेनियम की छड़ें गायब हुई हैं! छड़ें गायब कैसे हुईं, यह किसी को नहीं पता! चोर के आने या जाने का कोई निशान नहीं मिला है!...
...पर दोनों प्लांट के पास वाले शहरों में यह हादसा होने से पहले, छोटे-छोटे इलाकों में ठीक वैसे ही भूकंप आए थे, जैसे अभी महानगर में आए थे!
हमको अभी-अभी पता चला है कि तुमने उसका कारण वह बिच्छू खोज भी लिया, और उसे काबू में भी कर लिया!...
...यूनिवर्सिटी बॉयोलैब में हुए टेस्टों से ऐसे संकेत मिले हैं, जिससे यह पता चलता है कि उस बिच्छू में 'रेडियो एक्टिविटी' है! हमारे ख्याल में यूरेनियम की चोरी इस बिच्छू द्वारा ही की जा रही थी! ...
अगर ऐसा है तो फिर यह खतरा तो खत्म हो चुका है! फिर आप मुझसे क्या चाहते हैं!

हम कोई भी खतरा उठाना नहीं चाहते नागराज! हो सकता है कि ऐसा सिर्फ एक नहीं बल्कि कई बिच्छू हों! हम चाहते हैं कि जब तक यह खतरा टल न जाए तब तक तुम इस पॉवर प्लांट की सिक्योरिटी पर नजर रखो! कम से कम एक या दो दिनों तक तो सतर्क रहना ही पड़ेगा!
मिस्टर शर्मा का कहना सच ही सकता है। क्योंकि अब मुझे याद आ रहा है कि जब मैं बिच्छू द्वारा बनाई गई सुरंग में घुसा था, तब मैं बीच में ही, बिच्छू को असंतुलित करने के लिए बाहर निकल आया था। जबकि सुरंग और आगे जा रही थी। ऐसे और जीव भी हो सकते हैं!
तुम क्या सोचने लगे नागराज? शायद तुमको मेरी बातों पर यकीन नहीं आ रहा है!
नहीं, नहीं, मिस्टर शर्मा! मुझे आप पर पूरा यकीन है!
और फिर यह मामला तो हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित है। इसमें सोचने का तो प्रश्न ही नहीं है!
मैं तैयार हूं!
आप सबसे पहले मुझे वह जगह दिखाइए, जहां पर यूरेनियम की छड़ें रखी जाती हैं!
और तब तक मैं अपने सर्पों से बिच्छू वाली सुरंग की छानबीन करवाता हूं। देखूं कि आखिर वह सुरंग जाती कहां तक है!
आओ! मैं खुद तुमको पूरा पॉवर प्लांट दिखाता हूं!
यह देखो नागराज! ये हमारे न्यूक्लियर रिएक्टर का केन्द्र है! इन सुराखों द्वारा नालियों में यूरेनियम की छड़ों को डाल दिया जाता है। और फिर न्यूट्रानों नामक आणविक कणों का तेज प्रहार किया जाता है।

इस 'न्यूट्रॉन बमबारी' से यूरेनियम का अन्य हल्के तत्वों जैसे बेरेलियम वगैरह में विघटन होता जाता है, और साथ में तेज आणविक ऊर्जा भी निकलती है!
जैसी परमाणु बम के फटने पर निकलती है! पर परमाणु बम तो तबाही मचा देता है। यहां पर आप इस ऊर्जा को नियंत्रित कैसे करते हैं?
वह भी बताता हूं!
ये देखो! यूरेनियम की छड़ें इस द्रव में डूबी रहती हैं। इस द्रव को 'भारी पानी' कहते हैं! वैसे तो यह पानी की तरह ही होता है। पर इसके अणु, पानी के अणुओं से थोड़े से ज्यादा ठोस होते हैं! और इस कारण यह न्यूट्रॉन कणों की एक सीमित संख्या को ही यूरेनियम छड़ों तक पहुंचने देता है। अधिकतर न्यूट्रानों को बीच में ही रोक लेता है! और न्यूट्रानों की इस सीमित बमबारी के कारण, ऊर्जा भी नियंत्रित मात्रा में ही निकलती है!
ओह! समझ गया! और अगर इन यूरेनियम छड़ों को गायब कर दिया जाए तो ऊर्जा निकलनी बन्द हो जाएगी, और विद्युत उत्पादन ठप्प पड़ जाएगा!
बिल्कुल सही!
आप अब अपनी चिन्ता मुझ पर छोड़ दीजिए मिस्टर शर्मा! मेरे जिन्दा रहते इन यूरेनियम छड़ों को ले जाना तो दूर, इनको कोई हाथ तक नहीं लगा सकता!
तुमने मुझे निश्चिन्त कर दिया नागराज! वैसे अगर तुमको जरूरत पड़े तो इस अल्मारी में एंटी रेडिएशन सूट रखे हैं! कोई खतरा होने पर तुम इनको पहन सकते हो!
धीरे-धीरे दिन का उजाला, रात की काली चादर को ओढ़ता जा रहा था। और महानगर में चहल-पहल बढ़ती जा रही थी-
महानगर में बिजली की सप्लाई एटामिक पॉवर स्टेशन द्वारा ही की जा रही थी-

इसीलिए एकाएक पूरे शहर में अंधकार छा जाने का एक ही अर्थ लगाया जा सकता था-
और वह यह-
कि महानगर में बिजली की आपूर्ति करने वाले पॉवर प्लांट में कोई खराबी पैदा हो गई है-
मेरे सर्पों ने सुरंग की छानबीन तो कर ली है। पर उनके अनुसार सुरंग थोड़ी सी आगे जाकर एकाएक खत्म हो जाती है... अरे! यह लाइट कैसे गुल हो गई? और वह भी पॉवर स्टेशन की! जमीन फिर से कांप रही है! यानी कोई खतरा आने वाला है!...
... मुझे रोशनी का इंतजाम खुद ही करना होगा!
मेरे जगमग सर्प इस अंधेरे को इतना तो रोशन कर ही देंगे कि हल्का-हल्का सा नजर आने लगे!
और तब तक पॉवर प्लांट का बैक-अप जेनरेटर चालू हो ही जाएगा!
अंधेरे के रोशन होते ही नागराज को जो नजर आया-
उसने उसे चौंकाकर रख दिया-
अरे! मैं तो किसी बिच्छू के इंतजार में था! पर यह तो किसी... इन्सान का हाथ लगता है!
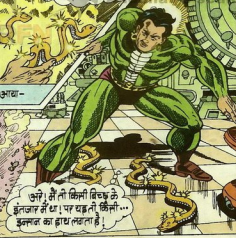
सख्त जमीन की खामोशी से मक्खन की तरह पिघलाता जो प्राणी बाहर निकला, उसने नागराज के होश उड़ा दिए—
यह क्या बला है? पहले विशालकाय बिच्छू, और अब ये मद्धिम अंधेरे में हल्का-हल्का सा चमकता प्राणी। वैसे शारीरिक संरचना के हिसाब से देखा जाए तो इसे इन्सान ही कहा जाएगा!
और... और इसके बाहर आते ही जमीन का पिघला हिस्सा फिर से ऐसे जुड़ गया है, जैसे यहां पर कभी कोई छेद था ही नहीं!
यह मुझ पर ध्यान दे ही नहीं रहा है! इसको किसी और चीज की तलाश है!

और यह अन्दाज लगाने के लिए दिमाग लगाने की कतई जरूरत नहीं है... कि वह चीज 'यूरेनियम रॉड्स' हैं!
यह रॉड्स की तरफ ही बढ़ रहा है! मुझे इसको रोकना होगा!
नागराज उस प्राणी को रोकने के लिए आगे लपका—
और चीखकर पीछे आ गिरा—
आऽऽऽह! इसका शरीर तो बहुत अधिक भारी है। मेरे इस वार से तो इसको बहुत दूर जाकर गिरना चाहिए था...
...पर यह सिर्फ एक कदम हिला है! और इसके शरीर का स्पर्श करते ही मुझे फिर से वैसी ही कमजोरी का एहसास हो रहा है, जैसा बिच्छू वाली सुरंग में घुसने पर हुआ था!
मेरे सूक्ष्म सर्प नष्ट हो रहे हैं! और अब मुझे इसका कारण समझ में आ रहा है!
ऐसा 'रेडिएशन' के कारण हो रहा है! इस प्राणी के अन्दर तीव्र रेडिएशन मौजूद है! और उस सुरंग में भी रेडिएशन की अच्छी खासी मात्रा मौजूद रही होगी! और इन्सान के शरीर की कोशिकाओं की तरह मेरे सूक्ष्म सर्प रेडिएशन से नष्ट हो जाते हैं। मुझे इस कमजोरी से संभलने में कुछ पलों का समय लगेगा!
नागराज को संभलने में जितना वक्त लगा—

इतनी देर में वह प्राणी यूरेनियम रॉड्स को बाहर खींच चुका था।
अरे! यह तो एक और मुसीबत हो गई! अभी तक तो मैं सिर्फ इस प्राणी की रेडियो एक्टिविटी से अपने आपको संभाल रहा था, पर अब तो इन यूरेनियम रॉड्स की रेडियो एक्टिविटी से भी निपटना होगा!
देखूं, इस पर मेरा विष कितना कारगर सिद्ध होता है!
फ़ू ऊ ऊ
पर लगभग तुरन्त ही उसने अपने आपको संभालकर नागराज पर एक भीषण वार कर दिया—
नागराज की फुंकार से वह 'प्राणी' लड़खड़ाया तो जरूर—
ओफ़! स्थिति और जटिल होती जा रही है! इसके वारों में 'न्यूक्लियर ब्लास्ट' के गुण हैं!... इसके ये वार इस पॉवर स्टेशन को तबाह करके, रेडियो एक्टिविटी का खतरा पूरे महानगर पर फैला सकते हैं। मुझे इसे यहां से दूर ले जाना होगा, और यह काम मैं सिर्फ 'यूरेनियम रॉड्स' को अपने साथ ले जाकर ही कर सकता हूं। वर्ना और कोई ऐसा कारण नहीं है, जिससे ये मेरे पीछे आए!...
...पर मैं यूरेनियम रॉड्स छुऊंगा कैसे? इनको छूते ही मेरे शरीर के सूक्ष्म सर्प मरने लगेंगे, और मैं कमजोर होता जाऊंगा!

अभी से ही इसके वारों के कारण, यहां पर रेडियो एक्टिविटी की मात्रा बढ़ रही है, और मेरी शक्ति क्षीण हो रही है! देखता हूं कि 'ध्वंसक सर्प' बिच्छू की तरह इस पर भी असर डाल पाते हैं या नहीं!
ध्वंसक सर्प जाकर उस प्राणी के शरीर से लिपट गए-
और फिर जब वे एक धमाके के साथ फटे, तो उस प्राणी का शरीर भी टूट गया-
धड़ाक क क
वाह! ये 'ध्वंसक सर्प' मुझे पहले क्यों नहीं मिले?
नागराज की यह खुशी-
ज्यादा देर तक कायम नहीं रही-
क्योंकि अगले ही पल-
आऽऽऽह! यह टूटकर जुड़ भी गया, और दोनों बार इसके शरीर से तेज आणविक ऊर्जा निकली! ...
... इस ऊर्जा को मैं तो झटकों के कारण सह गया, पर आम इन्सान को यह झुलसाकर रख देती! जैसे मेरे अंदर कणों को तोड़ने और जोड़ने वाली इच्छाधारी शक्ति है, वैसे ही इसके अंदर 'आणविक शक्ति' है! यानी इसको नष्ट करने का तरीका सोचना बेकार है! इस पर काबू पाने का रास्ता ढूंढना होगा!
पर सोचूं तो तब, जब रेडियो एक्टिविटी के कारण मेरी शक्ति का क्षीण होना रुके! ...

आहा! वह 'स्टीरेडिएशन सूट'! यह मेरी मदद कर सकता है! पर शायद यह प्राणी भी मेरी योजना को समझ गया है! यह मुझे उधर जाने ही नहीं दे रहा है! ... मैं इच्छाधारी कणों में बदलकर उधर जा तो सकता हूं, पर इसकी आणविक शक्ति मेरे इच्छाधारी कणों के जुड़ने में रुकावट पैदा कर सकती है! लेकिन और कोई रास्ता नहीं है!
मुझे यह खतरा मोल लेना ही पड़ेगा!
नागराज ने मानवता को बचाने के लिए एक भयंकर खतरा मोल ले तो लिया था-
पर इस खतरे को टाल पाना आसान नहीं था-
ओफ! आणविक ऊर्जा से भरे इस वातावरण में इस इच्छाधारी रूप में तैरना ऐसा लग रहा है मानों मैं गोंद की नदी में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा हूं! यह आणविक ऊर्जा मेरे कणों को और तोड़ने की कोशिश कर रही है! पता नहीं मैं एंटी-रेडिएशन सूट तक पहुंच पाऊंगा या नहीं!
आणविक ऊर्जा से इस लड़ाई में जीत आखिरकार इच्छाधारी शक्ति की ही हुई-
इच्छाधारी शक्ति के कण दरार में घुसते चले गए-
और सूट के अंदर घुसकर अपना वास्तविक आकार लेने लगे-

अब नागराज, उस प्राणी का सामना करने के लिए तैयार था-
इस पोशाक के मॉस्क में छेद करने के बाद अब मैं हमला भी कर सकता हूं, और इसके विकिरण से बच भी सकता हूं!
धड़ाक
अब मैं इसके संभलने से पहले यूरेनियम रॉड्स की बगैर किसी खतरे के उठा कर...
...यहां से रफूचक्कर हो सकता हूं! और इसकी बीस्वलाइट साफ बता रही है कि ये मेरे पीछे जरूर आएगा!
मेरे ऐसा करने से विद्युत उत्पादन में बाधा तो जरूर पड़ेगी, लेकिन शायद महानगर इस 'आणविक खतरे' से बच जाएगा!
उस प्राणी को यूरेनियम रॉड्स के जोर पर खींचता हुआ नागराज-
शहर से दूर तो ले आया था, पर यह भूल गया था कि यह सूट विकिरण को तो रोक तो सकता है, पर 'आणविक वार' की प्रचंड ऊष्मा को नहीं-
आऽऽऽह! यह आखिरकार मुझ पर निशाना साधने में कामयाब हो ही गया...

यूरेनियम रॉड्स के साथ-साथ नागराज भी जमीन पर आ गिरा–
धमममम
और होश संभालते ही उसने जो दृश्य देखा, उसने उसे चकित कर दिया–
यह... यह तो यूरेनियम की छड़ों को खा रहा है। यानी ये प्राणी यूरेनियम को खाने के लिए चुराता है! इसीलिए ये 'आणविक ऊर्जा' से भरा हुआ है!
कड़ड़
चबड़
'ये प्राणी' 'नहीं' मुझे 'रिएक्टर' बोल जहरीले!
क्योंकि कुछ कमीनों की मेहरबानी से मेरा इंसानी शरीर चलता-फिरता न्यूक्लियर रिएक्टर बन गया है!
तुम तो बोलते भी हो रिएक्टर! और मुझे भी 'जहरीले' नहीं नागराज बोलो! वैसे तुम्हारी ये हालत हुई कैसे?
तुमने रूस में स्थित 'चेर्नोबिल एटॉमिक रिएक्टर' में हुए हादसे का जिक्र तो सुना ही होगा...
...जिससे रिएक्टर क्षतिग्रस्त हो गया था, और उससे निकले विकिरण ने पूरे इलाके में दहशत फैला दी थी!

मैं 'चेर्नोबिल रिएक्टर' के पूर्वी भाग में उस वक्त काम कर रहा था, जिस वक्त 'न्यूक्लियर रिएक्टर' अनियंत्रित हो गया, और उस कारण हुए हल्के से धमाके ने पूर्वी भाग को मलबे के ढेर में बदल दिया। मैं अपने चार साथियों के साथ उसी मलबे में दफन हो गया! हम मदद का इंतजार करते रहे, चीखते रहे, रोते रहे, पर मदद नहीं आई! वहां पर फैली तेज रेडियो एक्टिविटी के कारण हर कोई वहां पर आने से डरता रहा! कुछ भूख-प्यास के कारण और कुछ विकिरण के कारण मेरे चारों साथी एक-एक करके मर गए! मैं भी मौत के कगार पर खड़ा था...

...कि तभी मुझे एक कॉकरोच नजर आया! शरीर की जलन और भूख की बदहवासी में उसे ही खा गया! पर उसको खाने के बाद मुझे अपने शरीर में एक अजीब सी शक्ति का संचार होता हुआ सा महसूस हुआ! मुझे लगा कि मेरे बचने की उम्मीद है!...

...मेरा शरीर मुझे दहकता हुआ सा महसूस हो रहा था! और फिर मेरे हाथों से उस प्रतिक्रिया के कारण तेज ऊष्मा निकलने लगी! उसने जमीन तक को गला डाला! और मैं उस गली जमीन से सुरंग बनाता हुआ बाहर निकल आया। मुझे पता नहीं कि इस दौरान कितना वक्त बीत चुका था! एक हफ्ता, एक महीना या एक साल! पर मेरे अन्दर की भूख अब एक ही चीज मांग रही थी! विकिरण से भरी कोई चीज!...

...बस, फिर तो मैं हर चलती-फिरती चीज की तलाश में जुट गया। छिपकली, चूहे यहां तक की चींटियों को भी मैंने नहीं छोड़ा। विकिरण उन सबके अंदर समाया हुआ था। और उनके शरीर का विकिरण मेरे शरीर के विकिरण से मिलने के बाद एक अजीब सी प्रतिक्रिया कर रहा था!...

शीत नागकुमार के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें-फन

मेरा दिमाग ठंडा होने से पहले मैं तुम्हें ठंडा कर दूंगा!
रिस्क्टर का शरीर छोटे-छोटे आणविक कणों में टूटने लगा, और उस प्रतिक्रिया से निकली असहनीय गर्मी ने बर्फ के साथ-साथ, नागराज और शीतनागकुमार के शरीरों को भी झुलसाना शुरू कर दिया-
आऽऽऽह! तुम वापस मेरे शरीर के अंदर जाओ शीतनागकुमार! ... हमारी नागशक्तियां इसकी आणविक शक्तियों का मुकाबला नहीं कर पा रही हैं! मुझे इसकी कोई और कमजोरी ढूंढनी पड़ेगी!
मैदान में डटे रहने वाले को, देर-सबेर कोई न कोई तरीका हाथ लग ही जाता है-
ठीक इसी समय- महानगर के एक हिस्से में-
यह अपराध है तो छोटा सा, पर नागराज का आदेश है कि किसी भी अपराध को मामूली न समझा जाए। मुझे नागराज को 'मानसिक संकेत' भेजने ही होंगे!
मानसिक संकेत महानगर की हर दिशा में फैलते हुए-
वहां भी जा पहुंचे, जहां पर उस संदेश को ग्रहण करने वाला मौजूद था-
आ र्र्र्र घ
ओह! महानगर से किसी अपराध की 'मानसिक सूचना' आ रही है! पर इस वक्त मैं 'रिस्क्टर' को छोड़कर वहां नहीं जा सकता ... अरे! रिस्क्टर को क्या हो रहा है! यह अपना सिर क्यों पकड़ रहा है!

Amaan
आहा! इसी सर्प का दूसरा 'मानसिक संकेत' आ रहा है कि पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंच कर लुटेरे को पकड़ लिया है! अब मुझे जाने की जरूरत नहीं रही। अब यह सोचना है कि एकाएक इसे ऐसा क्या हुआ कि यह सिर पकड़ कर चीख उठा... ओह! इसे जो कुछ भी हुआ था, वह ठीक हो गया है!
पर इसे हुआ क्या था? ओह! समझा! मानसिक संकेत आते ही यह सिर पकड़कर चीखने लगा था, और संदेश आना बन्द होते ही यह ठीक हो गया! यानी 'मानसिक संकेत' इसके दिमाग पर आघात लगाते हैं! ... एटामिक ऊर्जा ने इसके शरीर को तो अद्भुत शक्ति दे दी है, पर इसके दिमाग को इतना खोखला कर दिया है कि यह 'मानसिक संदेशों' तक को सह नहीं पा रहा है! अब तो इससे निपटना बहुत आसान हो गया है!
मैं पूरे शहर में फैले अपने जासूस सर्पों से मानसिक संकेत भेजने को कहता हूं!
वे सारे संकेत जब एक साथ, मेरे साथ-साथ इसके दिमाग से भी टकराएंगे, तो यह अपने होश काबू में नहीं रख पाएगा! और यह मानसिक बमबारी तब तक जारी रहेगी, जब तक इसे स्थायी रूप से कैद रखने का कोई रास्ता निकाल नहीं लिया जाता!

नागराज की चाल सफल तो होती नजर आ रही थी, पर 'रिफ्क्टर' भी इस हमले से बचने की जी-तोड़ कोशिश कर रहा था-
ओह! यह 'स्टामिक कणों' में बदल कर इस हमले से बचना चाहता है! पर मानसिक तरंगें तो इस रूप में भी इसको नहीं छोड़ेंगी! लेकिन ऐसा करके यह जो विकिरण छोड़ रहा है, उसकी गर्मी से मुझे तकलीफ जरूर हो रही है!
इस अजीबोगरीब हमले और बचाव के तरीकों के कारण वातावरण मानसिक शक्तियों और आणविक शक्तियों के अनोखे मिश्रण से भरता जा रहा था-
लेकिन ऐसा करके रिफ्क्टर अपने अंदर भरी आणविक ऊर्जा को खर्च करता जा रहा था-
और उसके ऊपर हमला कर रही मानसिक तरंगें और प्रभावी होती जा रही थीं-
आखिरकार रिफ्क्टर के पैरों ने उसका साथ छोड़ दिया-
अब यह तो इस बमबारी से संभल नहीं पाएगा! पर अब तक पॉवर हाउस वालों ने इस लड़ाई की खबर फैला दी होगी, और पुलिस वालों के साथ-साथ रिपोर्टर भी यहां पर पहुंचते होंगे! मैं फिलहाल उनके सवालों के जवाब देना नहीं चाहता!
यह काम डायरेक्टर साहब पर छोड़ देता हूं! मैं राज का रूप धारण कर लेता हूं! राज को यहां पर देखकर सब यह समझेंगे कि वह भी खबर पाकर अभी आया है!

नागराज ने बेल्ट में सूक्ष्म करके रखे हुए राज के कपड़ों को निकालने के लिए अपनी बेल्ट में हाथ डाला–
और वह चकित हो उठा–
अरे! राज के कपड़े, चश्मा और जूते कहां गए? कहीं मैं उन्हें रखना भूल तो नहीं गया? नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता! जरूर वे कपड़े 'थिम्प्टर' से मेरी लड़ाई के दौरान कहीं गिर गए होंगे! ऐसा होना तो मुश्किल है, पर ऐसा ही हुआ होगा!
ऐसा नहीं हुआ है! वे कपड़े मेरे पास हैं!
कौन?
त...तुम! यह नहीं हो सकता! यह असंभव है! असंभव है!
आंखों देखी बात को असंभव कह रहे हो नागराज! तुम जो देख रहे हो, वह सच है। मैं राज हूं! और मैंने तुम्हारा साथ छोड़ने का फैसला कर लिया है!
तुमने राज का 'कायर' के रूप में बहुत इस्तेमाल कर लिया! अब से राज अपनी जिन्दगी खुद जिएगा! और नागराज के काम नागराज से भी बेहतर करके दिखाएगा।
यह कैसे हो सकता है? मेरा ही रूप मुझसे अलग कैसे हो सकता है? राज और नागराज दो इंसान नहीं, एक ही इंसान हैं!
तुमको मेरे शरीर में वापस आना ही पड़ेगा, राज!

मुझे रोकने की कोशिश मत कर नागराज! वर्ना मैं तेरे दिल की धड़कनें रोक दूंगा! ...
नमूना देखना चाहता है तो देख ले! ...
...और इससे पहले कि मैं तेरी जान निकाल लूं, तू गिड़गिड़ाकर जिन्दगी की भीख मांग!
आऽऽऽह! इसका स्पर्श होते ही मेरे शरीर का पू 'नर्वस सिस्टम' कांप लगा है! मैं खड़ तक नहीं हो पा रहा हूं!
तू अब खड़ा नहीं होगा नागराज, बल्कि लेटेगा और सोएगा! मौत की नींद!
मैं जो सोचता हूं उसे यह कैसे जान लेता है?

वह इसलिए नागराज, क्योंकि हम दोनों हैं तो एक ही सिक्के के दो पहलू। मैं भी तेरा ही रूप हूं! इसलिए यह तो स्वाभाविक है कि जो तू सोचेगा वह मुझे पता चल जाएगा! इसलिए कुछ गलत मत सोचना!
वैसे सोचना है तो भगवान के बारे में सोच, और अपने पापों की माफी मांग! क्योंकि अभी कुछ पलों बाद तुझे उसके ही दरबार में पेश होना है!
कौन?
अरे, हम हैं बनारस के भइया, नागू! आप तो हमको इस बदन से बाहर निकलते ही भूल गए! हाएं?
वैसे आपने तो सोचा होगा कि हम हैं भोले-भाले सांप! आपकी चाल तो समझ पाएंगे नहीं!
हमरी अभी-अभी भगवान से हॉटलाइन पर बात हुई थी!
उन्होंने साफ-सफाई के लिए पहले आपको बुलाया है!
पर भइया राज जी, हम आपकी चाल भी समझ गए, और आपकी ढाल भी!... आप नागराज पर मानसिक वार कर रहे हैं!
और उसका जवाब नागराज भइया को भी देना आता है, और हमको भी! लीजिए, हमरा नमूना भी देख लीजिए!
आऽऽऽह! तू अपने आपको फिल्मी हीरो समझता है क्या, जो मुझे विलेन समझ कर पीट लेगा?
राज के पास मानसिक शक्तियों के अलावा दूसरी भयंकर शक्तियां भी हैं!
और उनसे तू नहीं बच पाएगा!
ओह! यह 'रिएक्टर' जैसे आणविक ब्लास्ट भी छोड़ता है! यह राज है कौन और ये शक्तियां इसमें कैसे आईं?

बार-बार एक ही बात सोचकर अपना दिमाग क्यों खराब कर रहा है, नागराज? बस इतना जान ले कि तू कुछ भी कर ले, पर मुझसे जीत नहीं सकता!
इस पर नागरस्सी और विष फुंकार दोनों ही बेअसर हो गईं! और अब ये आणविक शक्ति के वार कर रहा है। जिससे बचने का मेरे पास फिलहाल कोई उपाय नहीं है!...
...अब इसके वारों से बचने के लिए खतरा मोल लेकर, इच्छाधारी कणों में बदलना ही पड़ेगा! वर्ना ये वार शायद मेरी जान लेने में सफल हो जाएंगे!
नागराज सोचने पर मजबूर था–
और राज को इस तरह से नागराज की हर चाल के बारे में पहले से ही पता चलता जा रहा था–
अब तू मेरे जाल में फंसेगा नागराज!
अब मैं आणविक ऊर्जा का वार करूंगा!
और 'विकिरण' के कण तेरे इच्छाधारी कणों के बीच में ऐसे फंस जाएंगे, जैसे स्पंज में पानी! अब तू न जिएगा न मरेगा! क्योंकि 'विकिरण-कण' न तो तेरे इच्छाधारी कणों को जुड़ने देंगे और न ही उन्हें अलग-अलग होने देंगे! अब तू हमेशा के लिए इसी रूप में रहेगा! किसी को नजर नहीं आएगा!
अब तेरी जिन्दगी को जिएगा... राज!

उफ्फ! मैं ... के बावजूद भी ... और जब तक मैं इस ... किसी को दिखाई पड़ सकता हूं ... संपर्क कर सकता हूं! ... स्थिति में रहकर ... तो एकदम असंभव है!
राज! तुम यहां पर मुझसे पहले कैसे पहुंच गए?
तुम... हां... याद आया! तुम तो निशा हो! मेरे ऑफिस में ही काम करती हो! वैसे अगर मैं यहां पर न पहुंचता तो इस 'रिम्फ्टर' पर काबू कौन पाता?
ये 'रिम्फ्टर' कौन है?
यूरेनियम का चोर! इसी ने कई परमाणु संयंत्रों से यूरेनियम को चुराया था!... पर तुम लोग पीछे रहना!...
...इसके शरीर से तेज विकिरण निकल रहा है! उससे तुम लोगों को खतरा पहुंच सकता है!
और तुमको ... पहुंचेगा? यह कैसे ... है? तुम भी तो ... ही एक इंसान हो!
मैं इंसान हूं? हा हा हा! मैं राज हूं, राज! सर्वशक्तिमान राज!

लेकिन हमको तो खबर मिली थी कि एक अजीब सा आदमी नागराज का पीछा करता-करता इस दिशा में आया था! फिर नागराज कहां गया?
नागराज इसके वारों को सह नहीं सका! उसने बचने की कोशिश तो बहुत की, पर 'रिस्क्टर' के स्टॉमिक ब्लास्ट ने उसके शरीर को ही स्टमों में बदल दिया! मर गया नागराज!
यह नहीं हो सकता नागराज को 'रिस्क्टर' जैसे शक्तिशाली भी नहीं मार सकते! तुम झूठ बोल रहे हो!
मैं झूठ क्यों बोलूंगा, निशा? जब नागराज थोड़े दिनों तक दुनिया के सामने नहीं आस्गा तो तुमको अपने आप ही सच्चाई का पता चल जास्गा!
चलो! अगर तुम्हारी इस बात पर यकीन कर भी लिया जास्तो यह कैसे संभव है कि जिस प्राणी ने नागराज को अणुओं में बदल दिया, उसे तुमने हरा दिया?
जो संभव होता है, वही आंखों से दिखता है, निशा! और जो आंखों से दिखता है, वही सच होता है! देख लो, मैं यहां पर हूं, और नागराज नहीं है!
तुम तो एक पामेरियन कुत्ते के भौंकने तक से डर जाते थे राज! तुममें इतनी हिम्मत कहां से आई कि तुम रिस्क्टर का सामना कर सको? और तुम यहां तक पहुंचे कैसे? तुमको तो किसी ने भी आते या जाते हुए नहीं देखा?
सवाल, सवाल, सवाल! रिपोर्टरों को इसके अलावा और कुछ आता ही नहीं है! धीरज रखो! सारे सवालों के जवाब वक्त आने पर मिल जाएंगे!
कुछ ही देर में घटनास्थल, हर तरह के लोगों से भर गया था! सिक्योरिटी फोर्स और न्यूक्लियर पॉवर स्टेशन वाले भी वहां पहुंच गए थे-
ओ माई गॉड! इसका रेडिएशन लेवल तो बहुत हाई है! इसको रेडिएशन प्रूफ स्थान पर ले जाना होगा!
सुरक्षित स्थान जैसे न्यूक्लियर पॉवर स्टेशन!

लाओ! इससे मैं तुम्हारी मदद कर देता हूं। पॉवर प्लांट यहां से ज्यादा दूर नहीं है! मेरी 'मानसिक ऊर्जा' ज्यादा खर्च नहीं होगी!...
सबकी आंखें आश्चर्य से गोल होती चली गईं-
दृश्य ही ऐसा था-
रिस्क्टर का शरीर हवा में उठकर 'पॉवर स्टेशन' की तरफ बढ़ने लगा था-
?
आश्चर्य है! राज के पास ऐसी शक्तियां, और नागराज गायब! कुछ बहुत बड़ी गड़बड़ हो गई है! मुझे मैडम भारती को पूरी रिपोर्ट तुरन्त देनी होगी!
नागराज गायब तो जरूर हो गया था, पर अपने वास्तविक ठोस रूप में आने की भरपूर कोशिश कर रहा था-
मुझे 'रिस्क्टर' के साथ-साथ पॉवर स्टेशन तक जाना होगा! शायद पॉवर स्टेशनवाले 'रिस्क्टर' के साथ-साथ मेरी समस्या का हल भी निकाल सकें! क्योंकि मेरी समस्या भी विकिरण से ही संबंधित है!...
...मेरे कण अपने आप तो उड़कर वहां तक जा नहीं सकते, इसीलिए मुझे 'राज' की मानसिक ऊर्जा की मदद लेकर वहां तक पहुंचना होगा!

निशा से खबर मिलने के बाद से भारती परेशान थी-
क्या बात है भारती ? मुझे आभास हो रहा है कि तुम परेशान हो! आज तुम ऑफिस भी नहीं गई! क्या बात है ?
सुबह मेरी स्टाफ रिपोर्टर निशा का फोन आया था कि नागराज लापता है। और राज में कुछ आश्चर्यजनक शक्तियां आ गई हैं। तब से मैं राज का इन्तजार कर रही हूं!
सारा दिन गुजर गया, पर न तो राज आया, और न ही उसकी कोई खबर!
चिन्ता क्यों कर रही हो भारती ? राज होगा तो नागराज कहां से आएगा और नागराज में मानसिक शक्तियां भी थोड़ी मात्रा में मौजूद हैं! उसने उन्हीं का प्रयोग किया होगा!
कैसी शक्तियां नागराज में नहीं हैं दादाजी! और वैसे भी वह राज के रूप में किसी शक्ति का इस्तेमाल नहीं करता, क्योंकि राज का रूप तो कायर का रूप है! असली बात तो नागराज से मिलकर ही पता चल सकती है। पर नागराज है कहां पर ?
नागराज चूर-चूर हो चुका है!
खत्म हो गया है!
और राज को दुबारा कायर कहने की गलती मत करना!... वरना यह तुम्हारी आखिरी गलती होगी!
राज तुम ? तुम आ गए! थैंक गॉड! और यह नागराज खत्म हो गया का क्या चक्कर है ? कहीं तुमने रिटायरमेंट लेने की तो नहीं सोच ली! खुद नागराज होकर नागराज को खत्म कर रहे हो ?
मैं नागराज नहीं हूं! मैं राज हूं! और अब मैं तुमको दिखाऊंगा कि मैं नागराज से बेहतर हूं!
आTTT
राज ऐसे-ऐसे काम करेगा, कि नागराज उसके सामने कायर लगेगा!

तुम पागल हो गए हो नाग... मेरा मतलब राज!
शांति रख! मैं अपने मस्तिष्क को पुलिस ट्रांसमीटर की फ्रीक्वेंसी पर ट्यून कर रहा हूं!...
...सभी अपराधों की खबरें आ रही हैं!
और वहां से दूर- नरोरा एटामिक पॉवर प्लांट में-
कमाल है सर! इसके अंदर तो इतना यूरेनियम भरा हुआ है कि अगर इसका सिर्फ एक बम बनाया जाए...
...तो पूरी पृथ्वी एक ही धमाके से तबाह हो जाए!
अब इसका क्या करें?
यह यूरेनियम के रेडिएशन पर ही जीता है सर! वही इसकी जीवन ऊर्जा है! और वह ऊर्जा धीरे-धीरे खर्च हो रही है। जब इसके शरीर के रेडिएशन का स्तर थोड़ा कम हो जाएगा, तब यह अपने आप शक्तिहीन हो जाएगा! हमको कुछ भी करने की जरूरत नहीं है!
वाह! यह यूरेनियम से आणविक ऊर्जा खींचता है। तो यह मेरे कणों में फंसे विकिरण को भी खींच सकता है!

नागराज के इच्छाधारी शरीर का स्पर्श रिप्क्टर के बेहोश शरीर से हुआ-
और नागराज तड़प उठा-
आऽऽऽह! विकिरण मेरे शरीर से इसके शरीर में जाने के बजाय, इसके पास से मेरे पास आ रहा है! मेरे शरीर में विकिरण की मात्रा और बढ़ रही है!
नागराज ने बड़ी मुश्किल से अपने आपको रिप्क्टर के शरीर से अलग किया-
ओफ्! मैं तो भूल ही गया था, कि ऊर्जा का बहाव, हमेशा ज्यादा से कम की तरफ होता है!
और रिप्क्टर के शरीर में विकिरण की मात्रा बहुत ज्यादा है! अब मैं क्या करूं? क्या सचमुच मुझे हमेशा के लिए इसी रूप में रहना पड़ेगा!
नागराज को इस रूप में पहुंचाने वाला, भारती के साथ तेजी से एक तरफ बढ़ रहा था-
हां! मैं उन अपराधियों को ढूंढ़ रहा हूं! अब वे मुझसे नहीं बच पाएंगे!
मैं धीरे-धीरे इस दिमाग पर कंट्रोल पा रहा हूं! वाह!
मिला है न? उन अपराधियों की ब्रेन-वेव्स मिली हैं! और फिंगर प्रिंट्स की तरह सबकी 'ब्रेन वेव्स' भी अलग-अलग होती हैं! मैंने अपनी 'ब्रेन वेव्स' के जरिए उन अपराधियों की 'ब्रेन वेव्स' को पकड़ लिया है! और अब मैं उनके छिपने के स्थान पर जाकर उनको भी पकड़ लूंगा!
दिमाग पर कंट्रोल पा रहे हो? यानी अब तक तुम्हारा दिमाग पर कंट्रोल नहीं था? खैर छोड़ो! यह बताओ कि तुम अपराधियों को ढूंढोगे कैसे? हम अभी बैंक की गांधीपुरा ब्रांच से होकर आ तो रहे हैं, पर वहां तो ऐसा कोई क्लू मिला नहीं, जो यह बता सके कि अपराधी गए कहां हैं!
जल्दी ही-
तुम्हारे अनुसार वे लुटेरे इस टीले के अंदर छिपे हैं! वाह! इस जगह तो इनको सचमुच कोई भी नहीं ढूंढ़ सकता था!
तू देखती जा कि अब मैं उनके साथ क्या करता हूं!

दादा! एक आदमी इधर ही आ रहा है! शायद उसे हमारे ठिकाने का पता चल गया है!
यानी यमराज को इसकी आत्मा की जरूरत आ पड़ी है। इसको उसी 'थर्मल लेसर गन' से उड़ा दे, जिससे हमने बैंक का स्ट्रांगरूम काटा था!
अच्छा! मुझ पर हमला करोगे! करो! करो! मुझे जितनी एनर्जी दोगे, मेरा पेट उतना ही भरेगा! मारो, मारो!
ओह! स्ट्रांगरूम को इसी गन से काटा गया होगा! यानी स्टील को गला देने वाली एनर्जी से राज का पेट भरता है!
अब देखो, मैं क्या करता हूं!
राज की मानसिक किरणों ने पूरी खोखली पहाड़ी को ऐसे काटना शुरू कर दिया, जैसे सेब को चाकू काट डालता है–
भागो! यह कोई शैतान है!
भागोगे? मुझसे बचकर भागोगे?
अरे मूर्खो? सिर्फ मौत ही तुमको मुझसे छिपा सकती है!
आऽऽऽऽऽई या याऽऽऽ
यह क्या कर रहे हो राज? ये सिर्फ मामूली लुटेरे हैं और तुम इनको जान से मार रहे हो! रुक जाओ! तुम सचमुच अपना मानसिक संतुलन खो बैठे हो!

Amaan
राज कॉमिक्स
तू मुझे रोकने की कोशिश करेगी? ले, मैं तेरा भी वही हाल करता हूं, जैसा मैंने उस लुटेरे का किया है! फिर आराम से बाकी दोनों का पीछा करूंगा!
घातक ऊष्मा किरण, भारती को सुलगा देने के लिए आगे लपकी—
लेकिन जब वह भारती तक पहुंची, तो भारती अपनी जगह पर नहीं थी—
उसे बचा लिया गया था—
नागराज! तुम और राज अलग-अलग? यह क्या चक्कर है?
लम्बी कहानी है, भारती! बाद में बताऊंगा! फिलहाल तो तुम यहां से निकल लो!
ना... नागराज! तू बच कैसे गया? तेरा बचना तो असंभव था!
मैंने 'लेड' की दीवार को छलनी की तरह इस्तेमाल करने की सोची। इससे पहले मैंने कभी भी अपने इच्छाधारी कणों को कोई दीवार पार कराने की कोशिश नहीं की थी—
कोशिशें तो मैंने बहुत कीं, पर सारी कोशिशें विफल हो गईं मिस्टर राज! पॉवर हाउस तक जाकर भी काम नहीं बना! तब मुझे ध्यान आया कि विकिरण को रोकने के लिए लेड यानी सीसा की चादरों का प्रयोग किया जाता है! जिस कक्ष तक रिएक्टर को तुमने पहुंचाया था, उसकी दीवारें भी लेड से ही बनी थीं! बस मैंने वह करने की ठान ली जो मैंने आज तक नहीं किया था!
इस काम में मुझे तकलीफ भी बहुत हुई और मुझे इच्छाशक्ति भी बहुत लगानी पड़ी, पर आखिरकार मेरे कण दीवार के अणुओं के आर पार हो गए, और विकिरण के कण दीवार में फंसकर रह गए—
48

बाहर आते ही मैंने फिर से अपना वास्तविक रूप धारण कर लिया! और अपने जासूस सर्पों से तुम्हारा पता लगवाकर यहां तक आ पहुंचा! और वह भी एकदम ठीक समय पर!
मैं तुमसे फिलहाल झगड़ना नहीं चाहता नागराज! अभी मुझे बाकी बचे दो अपराधियों के पीछे जाना है!
ताकि तुम उनका भी इसके जैसा हाल कर सको? वैसे उनकी चिन्ता छोड़ दो! उनको मेरे जासूस सर्पों ने अपने कब्जे में ले लिया है! जल्दी ही पुलिस भी उनको अपने कब्जे में ले लेगी!
और तुम मेरे कब्जे में आओगे!
वे मेरे शिकार हैं! मैंने ढूंढा है उनको! उनको मेरे अलावा और कोई नहीं पकड़ेगा!
ध्वंसक सर्प इस पर कोई असर नहीं डाल पा रहे हैं!
इसको कैद करने के लिए विशेष नागफनी सर्पों का प्रयोग करना पड़ेगा!
तेरी हर शक्ति अब मुझ पर बेअसर होगी नागराज! क्योंकि अब मैंने अपने दिमाग पर बहुत कुछ कंट्रोल पा लिया है!
देख! मैं हवा के अणुओं को जोड़-जोड़ कर अब कुछ भी बना सकता हूं!
यह हवा से भाले पैदा कर रहा है!
और उनका प्रयोग मुझे इस दीवार से चिपकाने के लिए कर रहा है!
नागफनी सर्प इसको अपने बंधन में नहीं ले रहे हैं! शायद इसलिए क्योंकि यह मेरा ही रूप है!
पर इसकी यह नई शक्ति तो आश्चर्यजनक है!
हां! तू ठीक सोच रहा है!
पर मैं तुझे सिर्फ चिपकाऊंगा ही नहीं...

सीथ्रू के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: इच्छाधारी विशेषांक

तब से मेरे कण महानगर के वातावरण में इधर-उधर मारे- मारे घूम रहे थे। लेकिन तेरी और रिस्क्टर की लड़ाई से महानगर का वातावरण, मानसिक और आणविक तरंगों के एक अजीबो गरीब मिश्रण से भर गया था! उसी मिश्रण ने मेरे कणों को इधर-उधर से खींच-खींचकर वहीं एकत्रित कर दिया, जहां पर तुम दोनों लड़ रहे थे!
मेरे कण तो जुड़ गए थे, पर मेरे पास शरीर नहीं था! वही पुरानी समस्या थी! पर इस बार मेरे 'कण शरीर' में मानसिक और आणविक शक्तियों के जोड़ थे! और इससे मुझमें कुछ अद्भुत शक्तियां आ गई थीं!
मैंने पहले की ही तरह तुम्हारे दिमाग को टटोलना शुरू किया! बड़ी सावधानी पूर्वक! और तभी मुझे वे 'मस्तिष्क सेल' मिले, जिनमें राज की मेमोरी थी! चूंकि तुम उस वक्त उनका प्रयोग नहीं कर रहे थे, इस कारण उनको चुराना संभव था!
अपनी नई शक्तियों की मदद से मैंने वे सेल चुरा लिए। याद करो, उस वक्त तुमको सिर में तेज दर्द भी हुआ था...
... उन 'सेलों' ने मेरा रूप पहले ही निर्धारित कर दिया था! उन सेलों ने 'वायु कणों' द्वारा मेरे शरीर का निर्माण शुरू कर दिया, और कुछ ही मिनटों में राज, नागराज के शरीर से बाहर खड़ा था... और उसके पास एक ऐसा शरीर था, जिसमें जबरदस्त आणविक और मानसिक शक्तियां थीं!
अगर ऐसा था तो मेरे मस्तिष्क से राज की मेमोरी खत्म हो जानी चाहिए थी! पर ऐसा तो नहीं हुआ!

वह इसलिए क्योंकि राज के कार्यकलापों की मेमोरी तुम्हारे दिमाग के कई दूसरे सेलों में भी स्थित है! खैर, अब सिर्फ कपड़े चाहिए थे! भई, शर्म तो आ रही थी न! मैंने तुम्हारे राज वाले कपड़े भी खींच लिए! और बन गया पूरा राज!
तब से मैं तुम्हारे दिमाग के सेलों पर कंट्रोल पाने की लगातार कोशिश कर रहा हूं! और मेरा कंट्रोल सौ प्रतिशत पूरा होते ही, यह शरीर परमानेंटली यानी स्थायी तौर पर मेरा हो जाएगा!

चलो! तुम्हारी जिज्ञासा तो खत्म हुई! अब तुम भी शांति से खत्म हो सकोगे! मैं तो चला इस दुनिया पर राज का राज फैलाने!

पर मैं ऐसा क्या करूं, कि सारी दुनिया अपने-आप 'बचाओ-बचाओ' कहकर मेरे सामने घुटने टेक दे? मुझे भगवान बना दे!... ऐसा तो तभी संभव है, जब मैं इनको दुनिया नष्ट करने की धमकी दूं! पर दुनिया नष्ट करने में तो मेरी बहुत ऊर्जा खर्च हो जाएगी! हां समझ गया...
...रिएक्टर!
मैंने नागराज के दिमाग में अभी-अभी पढ़ा था कि पॉवर प्लांट बनाने वाले यह कह रहे थे कि रिएक्टर के अंदर इतना यूरेनियम भरा है कि उससे अगर सिर्फ एक बम बनाया जाए तो वह बम पूरी दुनिया को एक साथ खत्म कर सकता है!
अभी बुलवाता हूं उसको अपने पास!
महानगर वासियों को नागराज के कारण अद्भुत नजारे तो अक्सर ही देखने को मिलते थे! पर आज का नजारा कुछ ज्यादा ही विचित्र था –
उड़ी बाबा!
मम्मी, लुक! एक आदमी उड़ रहा है!
हे भगवान! क्या मुसीबत आने वाली है? ऐसा तो मैंने पहले कभी नहीं देखा!
ओफ! यह तो आग से खेलने जा रहा है! अगर कहीं कुछ गड़बड़ हो गई और रिएक्टर सचमुच बम की तरह फट गया तो सृष्टि ही नष्ट हो जाएगी! मुझे इस कैद से आजाद होकर इसको रोकना होगा! पर कैसे? मेरा बदन तो दीवार से चिपका हुआ है, और ऊपर से आणविक खोल ने मुझे ढका हुआ है!
सबकी निगाहें उड़ते हुए रिएक्टर का पीछा करती-करती –
वहां पर जा रुकीं जहां पर रिएक्टर जा थमा था –
हा हा हा! आ गया मेरा हथियार! उठा लाया मैं इसको नरोरा पॉवर प्लांट से! अब ध्यान से सुनो महानगर वासियों...
...और इस खबर को पूरे संसार में फैला दो!

तुम्हारे सामने जो हवा में लटका रखा है, वह दिखने में तो इंसान है, पर है एक ऐसा भयंकर परमाणु बम जिसका धमाका पूरी दुनिया से सभ्यता का नामो निशान मिटा डालेगा!
और अगर इसके बारे में किसी को शक हो तो वह नरोरा न्यूक्लियर पॉवर स्टेशन वालों के पास जाकर अपना शक दूर कर सकता है!
NO
कैमरा इसी पर फोकस रखना! एक भी सीन मिस न हो!
रिलैक्स, निशा! नहीं होगा!
उड़ते आदमी के पीछे रिपोर्टर भी घटनास्थल पर पहुंच गए थे-
और सारी दुनिया वाले इस 'न्यूज फ्लैश' को आंखें फाड़ कर देख रहे थे-
और इस बम को सिर्फ मैं ही 'एक्टीवेट' कर सकता हूं, और मैं ही फटने से रोक भी सकता हूं! एक्टीवेट होने और फटने के बीच का फासला सिर्फ आधे घंटे का है!
माई गॉड! तुरंत 'न्यूडेल्ही' से चेक करो कि इस बात में कितनी सच्चाई है?
रिपोर्ट तुरंत आई है मिस्टर प्रेसीडेंट! खबर सौ प्रतिशत सच है!
इस आधे घंटे के अंदर-अंदर इस दुनिया के सभी देशों के राष्ट्राध्यक्षों को मेरी आधीनता स्वीकार करनी होगी! वर्ना न रहेगी दुनिया, न रहेंगे राष्ट्र और न रहेंगे राष्ट्राध्यक्ष!
हर राष्ट्राध्यक्ष को सिर्फ यह सोचना होगा कि उसने मेरी गुलामी स्वीकार कर ली है! उसकी विचार तरंगें अपने आप मेरे पास पहुंच जाएंगी! ... अब मैं इस बम को एक्टीवेट कर रहा हूं!
राज के हाथों से न्यूट्रॉनों की बौछार निकलकर सिम्क्टर के शरीर में घुसती चली गई! 'बम' एक्टीवेट हो गया-

पूरी दुनिया में बदहवासी फैल गई-
ओह! यह भगदड़ देखकर लग रहा है कि 'राज' ने अपनी धमकी पर अमल कर दिया है! मुझे इस कैद से आजाद होना ही होगा! पर कैसे? ... मेरा बदन दीवार से चिपका हुआ है, और ऊपर से 'आणविक अवरोध' ने मुझे ढक रखा है! दांस्-बांस् ऊपर-नीचे, कहीं से निकलने की कोई जगह नहीं है! सिर्फ एक ही जगह बचती है! ...
... और वह दिशा है... पीछे वाली!
नागराज के सूक्ष्म सर्पों ने भालों से हुए छेदों के रास्ते निकलकर-
दीवार की संधियों को खोद दिया-
और पीछे वाली रुकावट हटते ही नागराज ने आजाद होने में एक पल का समय भी व्यर्थ नहीं किया-
ओह! यह तो सचमुच फटने वाला है! यानी दुनिया वालों के सामने दो ही रास्ते बचे हैं! या तो 'सीथ्रू' की गुलामी कुबूल करें, और या नष्ट हो जाएं!
इसको फटने से रोकना होगा! और यह काम कैसे किया जा सकता है, यह सिर्फ एटॉमिक पॉवर एक्सपर्ट ही बता सकते हैं!
जल्दी ही-नरोरा पॉवर प्लांट में-
अब कुछ भी नहीं हो सकता नागराज!
कोई भी 'एटमबम' एक्टीवेट होने के बाद रुकता नहीं, सिर्फ फटता है!

वैसे भी, बीस मिनट तो गुजर ही चुके हैं। जिन्दगी के सिर्फ दस मिनट बचे हैं।... कम से कम उनको तो शांति से गुजार लो! जाओ!
नहीं, मिस्टर शर्मा! यह सृष्टि पागलों की जागीर नहीं है, जिसे बिना बात के नष्ट कर दिया जाए! यह भगवान की देन है। यह बचेगी और जरूर बचे... आहा! रास्ता है! एक रास्ता है मिस्टर शर्मा!
आइए मेरे साथ! और मुझे जो चीज चाहिए, वह मुझे दीजिए! समय बहुत कम है!
पर तुमको चाहिए क्या चीज नागराज?
पांच मिनट के अंदर-अंदर नागराज रिएक्टर के पास पहुंच चुका था-
आह! इसके शरीर से निकलने वाली विकिरण में बहुत ज्यादा तीव्रता और गर्मी है! मैं अपने होशो-हवास कायम नहीं रख पा रहा हूं! पर मैं जो काम करने आया हूं, उसे तो करना ही पड़ेगा!- करना ही पड़ेगा! पांच अरब इंसानों और अन्य अरबों जीवों की जान दांव पर लगी है!
?

मेरे सूक्ष्म सर्प भी तेजी से मर रहे हैं, और मेरी सर्प-रस्सी को बनाने वाले नाग भी खत्म हो रहे हैं! उतरने की कोई जगह ढूंढनी होगी!
कमाल है नागराज! तू तो जेल तोड़कर भागने वालों का लीडर लगता है! मैं तुझे हर बार बन्द करके आता हूं, और तू हर बार मेरी कैद से फरार हो जाता है! अबकी बार तू मरने से पहले ये क्या लेकर आ गया? तेरी आखिरी पूजा का सामान है क्या इसमें?
तुम सिर्फ कर्म कर सकते हो राज! फल देना ऊपर वाले का काम है, और तुमको हर बार जो फल मिल रहा है, उसे तुम देख ही रहे हो! और इस ड्रम में मेरी तो नहीं, पर रिएक्टर की आखिरी पूजा का सामान जरूर है!
आह! गर्मी से सारा बदन झुलस रहा है! यह ऊष्मा मेरी चमड़ी को उधेड़े दे रही है!
पर मुझे अपने होशो-हवास कायम रखने ही होंगे! अपना काम पूरा करना ही होगा!
डायरेक्टर शर्मा ने कहा था कि यह ड्रम और पाइप उसी धातु के बने हैं जिनसे अंतरिक्ष में जाने वाले रॉकेटों की बॉडी बनाई जाती है! ये तीन चार हजार डिग्री तक का तापमान सह सकते हैं! अब इस पाइप की रुख ही निशाने में रिएक्टर के खुले मुंह में घुमाना है!
रिएक्टर के मुंह में घुमाना है? क्या है इसमें? रिएक्टर के मरने से पहले इसके मुंह में गंगाजल डाल रहा है क्या?

यह जल तो जरूर है, लेकिन गंगाजल नहीं! इसको भारी जल कहते हैं, यानी हैवी वॉटर! इसका प्रयोग नाभिकीय प्रक्रिया को नियंत्रित करने में किया जाता है! और जब यह भारी जल रिस्क्टर के अंदर पहुंचेगा, तो रिस्क्टर के शरीर में अनियंत्रित हो रहे न्यूक्लियर रिएक्शन को नियंत्रण में ले आएगा!
कड़ड़ड़
क्यों कि यह उन न्यूट्रॉनों को या तो सोख लेगा, और या रोक लेगा! जिनके कारण यह प्रतिक्रिया आऊट ऑफ कंट्रोल हो रही है! देखा!
अब तेरा महा-घातक हथियार रिस्क्टर, बस से सच-मुच का रिस्क्टर बन गया है!
तूने मेरी एक योजना को बेकार कर दिया है नागराज! लेकिन मेरे पास ऐसी कई योजनाएं हैं! मैं चाहता तो था कि जब राज, दुनिया पर राज करे, तो तू उसे जरूर देखे! पर शायद यह देखना तेरी किस्मत में नहीं है! अब मेरी दूसरी योजना की शुरुआत तेरी मौत से होगी!
ताड़!
आऽऽऽह! गीदड़ धमकियां मत दे, राज...

तुम्हारे पास, मुझे मारने के लिए बहुत मौके थे! पर हर बार तुमने मुझे ऐसी हालत में ही छोड़ा, जिसमें मैं फंसा तो रह सकता था, पर मर नहीं सकता था...
...तुम मुझे मारना नहीं चाहते!... कारण क्या है, यह मैं नहीं जानता! पर मुझे मारने में तुम्हारा कुछ नुकसान जरूर है!
इस भ्रम में मत रहना, नागराज! मेरी दया को मेरी कमजोरी समझने की भूल मत कर!
मैं तुझे मारूंगा! जरूर मारूंगा! और वह भी तड़पा-तड़पाकर!
यह झूठ बोल रहा है! यह चाहे तो मुझे मारने के लिए घातक मानसिक या आणविक वार कर सकता है! पर यह ऐसा नहीं कर रहा है! शायद यही इसकी एकमात्र कमजोरी है! परन्तु इसका कारण क्या हो सकता है?
यह कह रहा था कि अपने दिमाग पर इसका कंट्रोल अभी सिर्फ नब्बे प्रतिशत है! यानी मेरे मस्तिष्क के चुराए गए सेल, अभी भी कुछ हद तक मेरे कंट्रोल में है!
कड़ड़
ड़ड़
धूम
भम
और अगर यह मुझे मार देगा, तो मेरे साथ मेरा मस्तिष्क भी मर जाएगा!...
...और साथ ही साथ मेरे मस्तिष्क के चोरी हुए वाले सेल भी मर जाएंगे! और ऐसा होने से यह राज भी खत्म हो जाएगा! क्योंकि इसका पूरा अस्तित्व मेरे सेलों पर ही आधारित है!

तू एकदम सही सोच रहा है नागराज! मैं तुझे सिर्फ तभी तक नहीं मार पा रहा हूं, जब तक तेरे 'सेलों' पर मेरा नियंत्रण सौ प्रतिशत न हो जाए! ...
...और उससे पहले मैं तुझे मरने भी नहीं दूंगा! तू आत्महत्या करके मुझे खत्म करना चाहे, तब भी नहीं!
आऽऽऽह!
मैं जो भी सोचता हूं, उसको यह तुरंत पढ़ लेता है, और मुझे कुछ भी योजना बनाने का मौका नहीं देता है! ओफ! मुझे भी क्या सूझी थी, राज बनने की! ...
... न मैं राज बनता, न ही राज का पात्र दुनिया के सामने आता!
और तब न ही राज मेरे शरीर से अलग होकर यह तबाही मचा पाता! ...
... अब मैं राज को भला कैसे मार सकता हूं! अहा! हां! यस!
मार सकता हूं!
अब तेरे 'मस्तिष्क' 'सेलों' पर मेरा कंट्रोल निन्यानबे प्रतिशत हो चुका है! सिर्फ एक प्रतिशत की कमी है! एक-दो मिनटों के अंदर वह कमी भी दूर हो जाएगी, और फिर यह शरीर स्थायी तौर पर मेरा हो जाएगा!
और उसके बाद मुझको तेरी जरूरत नहीं पड़ेगी! बता, अपनी जिन्दगी के आखिरी दो मिनटों में तू क्या करना चाहता है?
अपने कपड़े, चश्मा और जूते वापस लेना चाहता हूं!

हा हा हा! अच्छा मजाक कर लेता है! यानी तू हंसते-हंसते मारना चाहता है!
यह कोई मजाक नहीं है! मेरे दिमाग को अब पढ़कर देख, राज! और देख उसमें क्या है?
'राज' ने तुरन्त, नागराज के दिमाग को पढ़ना शुरू कर दिया, और-
न... नहीं! यह नहीं हो सकता! तुम ऐसा नहीं कर सकते! मुझे सिर्फ आधे मिनट की जरूरत है! सिर्फ आधे मिनट की। फिर मैं...
...अमर हो जाऊंगाSSSSS
अमर तो तू तब होगा, जब तू अस्तित्व में रहेगा, राज!
इसे मारने का तरीका मुझे शीशे में अपना चेहरा देखकर समझ में आ गया! मैंने तुरन्त अपने आपको खुद ही शीशे में देखकर, सम्मोहित किया, और अपने आपको राज की शख्सियत भूल जाने का आदेश दे डाला!
और यही बात जब 'राज' ने मेरा मस्तिष्क पढ़कर जानी कि राज तो कहीं है ही नहीं, तो मेरे चोरी हुए मस्तिष्क सेलों से भी राज की मेमोरी साफ हो गई, और उस मेमोरी पर आधारित राज का शरीर भी खत्म हो गया!
अब सीथ्रू फिर से 'सीथ्रू' बन गया है! यानी आर-पार दिखाई पड़ने वाला!
और फिर-
नि... निशा! इस कुत्ते को भगाओ न!
भौं भौं
वाऊऽऽऽ
थैंक गॉड कि तुम फिर से पहले वाले डरपोक राज बन गए हो! पर तुमको हुआ क्या था?
तुमने नहीं सुना? अरे, नागराज ने सबको बताया तो है कि उसके एक दुश्मन ने मुझे अपने वश में करके यह सब करवाया था! मेरी कोई गलती नहीं थी! अगर नागराज मुझे नहीं बचाता तो ये राज तो हो जाता...
...समाप्त.